* राजस्थानी लोकगीतों का वर्गीकरण *

इन लोकगीतों में राजस्थान के लोकमानस की भावनाएं, हर्ष, उल्लास, शोक - विषाद, प्रेम - ईर्ष्या, भय - आशंका, घृणा ग्लानि, भक्ति आदि भाव सरल एवं विशुद्ध रागात्मक रूप में प्रकट होते हैं। मानव मन की आकांक्षाएं, इच्छाएं लोकगीतों में सजीव हो उठी हैं। धार्मिकता का प्रचार - प्रसार भी इन्हीं से सम्भव है। कु-प्रथाओं, अन्धविश्वासों का उल्लेख भी ये गीत ही करते हैं और उनका विरोध भी ये गीत ही करते हैं। देश का सांस्कृतिक चित्रण इन्हीं गीतों में हुआ है। नैतिक तथा सामाजिक आदर्श भी इन्हीं गीतों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी प्रस्थापित एवं हस्तांतरित किये गये हैं।

* लोक गीतों का वर्गीकरण :→ राजस्थानी लोकगीतों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। अत: अध्ययन की सुविधा के लिये इनको वर्गीकरण की रेखाओं में बाँटना आवश्यक है। लोकगीतों को बाँटना कठिन कार्य है फिर भी मोटे तौर पर इनका वर्गीकरण इस तरह किया जा सकता है :-

1. देवी देवताओं के गीत
2. संस्कारों के गीत
3. पर्वोत्सव के गीत
4. बालक - बालिकाओं के गीत
5. पारिवारिक सम्बन्धों के गीत
6. पेशेवर गायकों के गीत
7. ऐतिहासिक चरित्र - प्रधान गीत

Teacher's Signature....

(2)

Page No.: 2
Date:

1. देवी - देवताओं के गीत ⇒ राजस्थान धर्म - प्रधान प्रदेश है। यहाँ अनेक पौराणिक एवं लोक देवी - देवताओं की पुजा अर्चना की जाती है। भिन्न - भिन्न त्यौहारों, पर्वों, विवाह, रातीजोगा आदि अवसरों पर इन देवी - देवताओं के गीत गाकर जनमानस अपनी आस्था प्रकट करता है। पौराणिक देवी देवताओं में दुर्गा, लक्ष्मी, गणेश, सरस्वती, इन्द्र, सुर्य, शिव, सत्यनारायण आदि की पुजा का विधान है, तो लोक देवी देवताओं में — करणीमाता, जीणमाता, हिंगलाज, शीतलामाता, सकराय माता, जसोल री भटियाणी जी, जमवाय माता आदि अनेक देवियाँ तथा लोकदेवताओं में रामदेव जी, पाबु जी, गोगा जी, जांभो जी, बाला जी, काळा - गौरा भैरू, भोमिया आदि की स्तुति के गीत गाये जाते हैं।

⇒ देवीयों की स्तुति एवं आराधना का एक गीत है —

"चालो चालो ओ चौसठ देवियाँ, जोधांणों जोवाजी जाय।
जोधाणांरो कासुण जोवणो ओ, जोधाणे महाराजो रा राज॥
चालो ओ चौसठ ओ मंडोवर जोवाजी जाय।
मंडोवर रो कासुण जोवजे ओ मंडोवर दाड़म दाख॥
वाड़ी रा वड़ रूलियामणा ओ सियली वड़ री जी छाय॥
नागादड़ी नाड़े भरी, ओ झिल्ली झालर वाव।
औरां रे दातण लाकड़िये म्हारी अंबली रे कारीली केळ।
औरां रे जीमण खाजा लाडू लापसी, अ म्हारी अंबली रे पांच पकवान॥

⇒ राजस्थान में देवी की पुजा के साथ - साथ भैरू की स्तुति गाई जाती है जैसे —

" भैरव काळा अर भैरव गौरा ओ वेरो रो आज।
तो बिन ओ भैरव तो बिन निरधा न होवसी॥
कठड़े ओ भैरव कठड़े लागी, प्रिती वार सगाळां।

Teacher's Signature..........

ओ शैरव कागळओं पैला चुतरिया ॥"

राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में शीतलामाता की आराधना की जाती है। शीतलामाता की आराधना करने से चेचक रोग नहीं होता, ऐसी मान्यता प्रचलित है। अत: शीतलामाता की स्तुति करने वाला एक गीत है जैसे –

"रामचन्दर जी ओ दरवाजा खोल,
थां पर माथा करै है माता शीतला।
म्हारा काँई ओ फरमावै माता शीतला?
थानै देसी ओ नगरी रो राज।
म्हानै काँई ओ फरमावै माता शीतला?
थानै देसी ओ बेटा पोता री जोड़।
थानै ठंडा झोला देसी माता शीतला॥"

2. संस्कार सम्बन्धी गीत ⇒ हिन्दुओं के धर्मशास्त्रों में सोलह संस्कारों का विधान है। इनमें गर्भाधान, जन्मोत्सव, नामकरण, मुण्डन, उपनयन, विवाह व अन्त्येष्टि प्रमुख संस्कार माने गये हैं। इन संस्कारों के अवसर पर गीत गाये जाते हैं।

(अ) जन्म के गीत ⇒ इन गीतों में गर्भाधान, गर्भवती के शरीर में होने वाले परिवर्तनों एवं उनकी प्रत्येक मास में होने वाली इच्छाओं का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन होता है। जैसे –

(५)

Page No.: 4

"पैलो मास उलरियो अे जच्चा वैरां आळसिये मन जाय।
अे दूजो अे मास उलरियो अे जच्चा, वैरां थूंकतड़े मन जाय ।।
अलवेली अे जच्चा चांदी रे प्याले केसर पांवसां ।।
तीजो मास उलरियो अे जच्चा नीबुड़े मन जाय।"

(ब) विवाह के गीत ⇒ विवाह गृहस्थ-जीवन के भव्य भवन का प्रवेश द्वार है। राजस्थान में विवाह की विभिन्न रस्मों से संबंधित अनेक गीत गाये जाते है। किसी शुभ-दिन व शुभ घड़ी में गणेश जी की स्थापना की जाती है और उसके पश्चात वर और वधु अपने-अपने घर में बाजोट पर बैठते है। उनके पीठी चढ़ाई जाती है। हल्दी व तेल के उबटन को पीठी कहते है। इस प्रकार पाट बिठाने और घी पिलाने की रस्म पुरी होती है। इस अवसर पर जो गीत गाया जाता है, वह इस प्रकार है —

"घी ही पी म्हारा आछ्या लाडा घी ही पी
थारी दादा पावें मायां पावें
ओर हिलावें हमसुं रळिया रंग करे।"

पुत्र अथवा पुत्री के विवाह के शुभ अवसर पर बहन अपने ससुराल अपने भाई की प्रतीक्षा करती है। वह भाई भावज को भात भरने का अथवा मायरा लाने का आग्रह करती हुई कहती है कि —

"वीरा थे आइलो भावज लाइलो
सिरदार भतीजा उमराव भाणेजा

Teacher's Signature..........

साथै लाडलो जी, ओ वीरा रिमक-झिमक होय आइजो ||
वीरा थे आइजो चुन्दड़ लाइजो
सिरदार भतीजा उमराव भाणेजा
साथै लाडलो जी ओ वीरा रिमक झिमक होय आइजो ||"

विवाह के अवसर पर विभिन्न वस्तुओं की मांग करने की प्रथा है। मनचली बन्नी बन्ने से मांग करती है —

"बन्ना म्हारा ओ अंगूरां री हवेली चुणाय दो
छाजा लगवाय दो झाडुम शाख रा।
बन्नी म्हारी रा कुळ में होवै सोई मांगरा
छाजा नहीं लागै झड़म शाख रा।

पाणिग्रहण के पश्चात ब्राह्मण मंत्रोच्चारण से विधिवत फेरे करवाता है। तीन फेरे में वधू आगे व वर पीछे रहता है तथा चौथे फेरे में वर आगे एवं वधू पीछे होकर पराई हो जाती है —

"पैलो फेरो तो बनड़ी भाभोसा री लाडली
दूजो फेरो तो बनड़ी काकोसा री भतीजी
तीजो फेरो तो बनड़ी वीरसा री बैनड़
चौथो फेरो तो बनड़ी हुई रे पराई ||"

कन्या की विदाई का अवसर बहुत ही हृदयविदारक होता है। विदाई के गीतों में तो करुणा की ऐसी धारा प्रवाहित होती है कि बरबर ही लोगों की आँखों से आसु बहने लगते हैं —

"आंबा पाका ने आंबली
महुड़ा लैहरा खाय
कोयलबाई सिध चाल्या
अे म्हें थांने पुछा म्हारी धीवड़ी म्हें थांसूं पुछा
इतरो भाभोसा रौ लाड़ छोड़ र बाई सिध चाल्या
हे आयो सळगो रौ सुवटो, हे आयो बंगां रो सुवटो
लेगयो टोळी मांय सूं टाळ गायड़मल ले चाल्यो।"

(ख) मृत्यु संस्कार के गीत ⇒ मृत्यु चिर सत्य है। जिसने इस संसार में जन्म लिया है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। राजस्थान में वृद्ध की मृत्यु पर गीत गाये जाते हैं। मृत्यु से बारह दिन तक गीत, हरजस, भजन आदि गाये जाते हैं। ये गीत शान्त रस से ओतप्रोत होते हैं। मृत्यु के अवसर पर 'हर का हिंडोला' गाया जाता है, जो इस प्रकार है-

"हर हर करता वडेरां थे उठ हालिया
कोई तुलछां री माळा थारै हाथ!
बेटा जी देवै थारै परकमा
कोई पोता जी करै रे डंडौत
जी ओ बड़ भागी थारै हर रो हिंडाळो
सदा संग रे हालै॥"

3. विभिन्न पर्वोत्सवों के गीत ⇒ रंगरंगीले राजस्थान में अनेक पर्वोत्सव मनाये जाते हैं। राजस्थानवासियों विभिन्न त्यौहारों एवं पर्वोत्सवों से उनका जीवन सरस बना रहता है तथा साथ ही धार्मिक भावना एवं लोकहित

में आस्था बनी रहती है। होली, गणगौर, काजली तीज, रक्षाबन्धन, दशहरा, दीपावली आदि प्रमुख त्यौहार है। अक्षय तृतीया, बछबारस, धनतेरस, गोवर्धन पूजा, भाईदूज, रामनवमी आदि अन्य त्यौहार भी मनाये जाते है। नवरात्रि में नौ दिन तक मेला लगा रहता है। कार्तिक मास का तो धार्मिक दृष्टि से बहुत ही माहात्म्य है। स्त्रियाँ इस मास में बहुत से उपवास, व्रत तथा दान-पुण्य करती है।

(i) गणगौर ⇒ राजस्थान मे गणगौर (गौरी) पूजा का प्रचलन है। चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को विशेष रूप से गणगौर पूजा होती है। उस दिन मेला लगता है और गणगौर की सवारी निकलती है। गणगौर पूजन के लिए स्त्रियाँ अपने पति से आग्रह करती हैं कि –

खेलण दो गिणगौर भंवर म्हाने पूजण दो गिणगौर
ओ जी म्हारी सहेलियां जोवे बाट
भंवर म्हाने पूजण दो गिणगौर।

शीतलाष्टमी से घुड़ला घुमाया जाता है। स्त्रियां कुम्हार के घर से एक ऐसी मटकी लाती है जिसमें छेद ही छेद होते है। उस मटकी में दीया जलाकर गीत गाती हुई वे कहती हैं –

घुड़लो घुमेला जी घुमेला, घुड़ला रै बांध्यो सूत!
घुड़लो घुमेला जी घुमेला, सुहागण बारै आव!!

Teacher's Signature.........

घुड़लो घुमेला जी घुमेला ।।
तेल बळै घी लाव घुड़लो घुमेला जी घुमेला ।
मोत्यां रा आखा लाव घुड़लो घुमेला जी घुमेला ।।

(ii) नवरात्रि एवं रामनवमी ⇒ चैत्रमास की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नवरात्रि पर्व मनाया जाता है। यह पर्व आश्विन मास में भी हर्षोल्लास से मनाया जाता है। दुर्गा की उपासना करते हुए व्रत किये जाते हैं। गेहूं के दाने बोकर 'जवारा' उगाये जाते हैं। जवारों की वृद्धि के साथ-साथ सुख सम्पत्ति की वृद्धि होती है, लोगों में ऐसी मान्यता प्रचलित है। अष्टमी को हवन किया जाता है। चैत्र मास की शुक्ला नवमी को रामनवमी मनाई जाती है। दशरथसुत मर्यादापुरुषोत्तम राम का जन्म इसी दिन हुआ था। अत: पौराणिक झांकियों के साथ राम की सवारी निकलती है। घरों में लोग लापसी, चूरमा आदि पकवान बनाते हैं।

(iii) आखातीज (अक्षयतृतीया) ⇒ राजस्थान में वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को आखातीज मनाई जाती है। इस दिन बड़ी की सब्जी, गुड़ की मीठी गुलवाणी तथा साबुत अन्न का खीचड़ा बनाया जाता है। इस दिन को विवाह के लिए शुभ मुहूर्त माना गया है। छोटे-छोटे बच्चे दुल्हा-दुल्हन बन घर-घर जाकर गीत गाते हैं –

'आखातीज बांडा बीज
गलवाणी रो गळियों खीच
घालो आखा घालो गुड़
नहीं घालो तो पइसा दो'

(iv) तीज ⇨ सावण मास की शुक्ल तृतीया को सावण तीज तथा भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की तृतीया को 'बड़ी तीज' का त्योहार मनाया जाता है। इस अवसर पर कुमारियां एवं सौभाग्यवती स्त्रियाँ व्रत रखती हैं। वे सत्तु बनाती हैं। नीम की डाली की पूजा कर रात में चांद देखकर उसे अर्घ्य देती हैं। फिर सत्तु खाती हैं। इस दिन झूला-झूलने की भी प्रथा है।

(v) रामदेव जी का मेला ⇨ भाद्रपद की शुक्ला दशमी को रामदेवरा नामक स्थल पर रामदेव का मेला लगता है। विभिन्न प्रदेशों से जातरू रामदेव जी के दर्शनार्थ आते हैं और रात-भर जागरण करते हैं। भजन गाते हैं:—

"खम्मा- खम्मा ओ म्हारा रूणिचा रा धणियाँ
थानें ध्यावें आखी मारवाड़ ओ आखी गुजरात ओ
अजमाल जी रा कँवरा
खम्मा खम्मा ओ म्हारा......

(vi) दीपावली ⇨ दीपावली भारत का प्रमुख त्योहार है। यह प्रकाश का त्योहार है। दीपावली के कई दिनों पूर्व से ही घरों की सफाई होने लग जाती है। रंग-रोगन से दीवारों को चमकाया जाता है। विभिन्न आकर्षक वस्तुओं से घरों की सजावट की जाती है। दीपावली के दिन विधिवत् लक्ष्मी-पूजन होता है। घरों के भीतर बाहर छत पर दीपकों की कतारें बहुत आकर्षक लगती हैं। स्त्रियां दीपदान करती हुई गाती हैं—

(10)

Page No. 10

सोने से म्हें दीवलो घडास्यां
रेशम बाट बटास्यां जी
च्यार बाट रो चौमुख दीवो
घी सुं म्हें पुरास्यां जी
चांदी रो थाळ मेल म्हारो दीवळो
रंग महल ले जास्यां जी
मही मही वार सुरंग म्हारो दीवळो
रंगमहल जगवास्या जी।

(vii) होळी ⇒ उमंग - उत्साह, राग - रंग एवं मस्ती का त्यौहार होली है। होली के महिने भर पहले से ही ढोल व चंग की मधुर आवाज सुनाई देने लग जाती हैं। सामुहिक टोली बनाकर पुरुष रात्रि में ढोल व चंग बजाते हुए फाग गाते हैं तो स्त्रियां लूर गाती हैं। होली के दिन होलिका - दहन होता है। दुसरे दिन सुबह धुलण्डी होती हैं। सभी लोग बड़े उत्साह से एक - दूसरे पर लाल, गुलाबी, हरे - नीले, काले रंग डालकर हल्ला - गुल्ला करते हैं। गीत गाते हैं, फाग का एक उदाहरण है —

ऊंचा पोढ्या ठाकरसा
अर नीचे सुती ठकराणियां
ठाकरसा खेखारो करियो, जागी ठकराणियां
पीसो बाजरो हां हां पीसो बाजरो
जाटणियां जोरावर हुयगी रे
पीसो बाजरो।

5. बालक - बालिकाओं के गीत ⇒ बालकों का अपना ही संसार है जिसमें

Teacher's Signature.........

छल, कपट, लालच, ऊँच - नीच, अमीर - गरीब व राजा - रंक का भेद भाव नहीं है। बालक बालिका खेल खेलते वक्त भी कई गीत गाते हैं जैसे -

कान्या मान्या कुर्र्र
जाइजो जोधपुर्र्र
लाऊ कबुतर्र्र उर्र्र
उड़ाय देऊ फुर्र्र

5. पारिवारिक सम्बन्धों के गीत :- परिवार सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य अपने परिवार में रहकर ही सुखी - जीवन व्यतीत कर सकता है। व्यक्ति को परिवार में रहने से कुछ खट्टे - मीठे अनुभव होते हैं। माता - पिता, भाई - बहिन, पति - पत्नि, बेटा - बेटी, बहुएं, पोते, नाती आदि परिवार के सदस्य होते हैं, जो परस्पर मिलकर रहते हैं। पति - पत्नि का सम्बन्ध कोमल, मधुर एवं सूक्ष्म होता है। उनके मध्य प्रेम की निष्कम्प दीपशिखा जलती है, उसका उजाला भी लोकगीतों में दिखाई देता है। परदेशवासी प्रियतम को घर बुलाने के लिए वह कहती है -

उड़ उड़ रे म्हारा काळा रे कागला
जद म्हारा पिवजी घर आवै
खीर खांड रो थनै थाळ परोसु !!
सोने री चोंच मंढाऊ रै कागा
जद म्हारा मारूजी घर आवै !!
पगल्यां में तेरे बांधु घुंघरा
गळे में हार पहराऊ रै कागा !!

6. पेशेवर गायकों के गीत ⊳ राजस्थान में कुछ ऐसी जातियाँ हैं, जो लोकगीत गाकर अपना गुजर-बसर करती हैं। पेशेवर गायक जातियों में ढाढ़ी, ढोली, मांगणियार, लंगा आदि प्रमुख हैं। ये गायक मुख्य रूप से प्रेमाख्यानमूलक गीत अधिक गाते हैं। इनके गीतों में विरह की व्याकुलता है तथा मिलन की उत्कंठा है। निहालदे गीत का एक अंश द्रष्टव्य है -

सावण तो लागौ पिया, भादवो जी कांई बरसण लागौ,
बरसण लागो जी मेह, हो जी ढोला मेह
अब घर आय जा, गोरी रा बालमा हो जी
छप्पर पुराणा पिया पड़ गया रे, कांई तिड़कण लागा,
तिड़कण लागा जोड़ा बांस, हो जी ढोला बांस
अब घर आय जा, बरसा रूत भली होजी ॥

7. ऐतिहासिक चरित्र-प्रधानगीत ⊳ राजस्थान वीरों की रणभूमि तथा सतियों की जौहर भूमि है। यहाँ के वीर मातृभूमि की रक्षा के लिये हँसते-हँसते रणभूमि में वीर गति को प्राप्त हो गये, तो यहाँ की वीरांगनाएँ अपने सतीत्व की रक्षार्थ जौहर कर अमर हो गई। अंग्रेजों की सत्ता एवं उनके अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाने वाले शूरवीरों में रतन राणा, आउवा ठाकुर, भरतपुर नरेश रणजीतसिंह, डूंगजी जवारजी आदि प्रमुख हैं। इन चरित्रों को आधार बना कर ऐतिहासिक लोकगीतों की रचना हुई। इसका उदाहरण प्रस्तुत है -

"वा वा रेळो बापरियो !"
मोड़की मगरी रो पाणी ढाळो ढाळ ढळियो रे

Teacher's Signature.........

अबु थारे पहाड़ा में अंग्रेज बड़ियो रे
काळी टोपी रो हां हां काळी टोपी रो
देस में छावणियां नांखी रे काळी टोपी रो
देस में अंग्रेज आयो कांई - कांई लायो रे
फूट नांखी भायां में बेगार लायो रे
काळी टोपी रो।"

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि इन लोकगीतों में राजस्थानी जनजीवन, धर्म और दर्शन, भक्ति और कला, संस्कृति का जैसा जीवन्त और प्रभावशाली चित्रण मिलता है। लोकगीतों का रचनाकार किसी एक वर्ग या सम्प्रदाय विशेष का नहीं है। सम्पूर्ण लोकसमाज ही इनका सिरजनहार है।